श्री सरस्वती चालीसा

॥ दोहा ॥

जय जग जननी शारदा, अगद्व्यापिनी देवि ।
आदि शक्ति परमेश्वरी, जय सुर नर मुनि सेवि ॥

॥ चौपाई ॥

जय जय सरस्वती कल्याणी । जय जगदम्बे वीणा-पाणी ॥
तेरा नाम परम सुखदाई । तब महिमा त्रिभुवन महँ छाई ॥
विद्या-बुद्धि सुमति गति जननी । कुंमति-निवारणि मंगल करनी ॥
जेते राग ताल स्वर नर्तन । त्रिभुवन पूजित सब तव नन्दन ॥
वाद्य कला की तु ही माता । श्रवण करत जग जेहि सुख पाता ॥
जहँ लगि जगत ज्ञान-विज्ञाना । सब तब समन सकल जग माना ॥
काव्य कला की माँ कल्याणी । कवि कोविद् वर की तू वाणी ॥
शेष सहस फण तब गुन गावें । नारद तब पद ध्यान लगावें ॥
तैंतिस कोटि स्वर्ग कर देवा । करत सकल मिलि तब पद सेवा ॥
सनकादिक ऋषिगण दिग्पाला । जपत सदा सब तेरी माला ॥
सकल ज्ञान विज्ञान की धारा । कवि कोविद् कर एक सहारा ॥
तुम चारों वेद रचाये । अखिल विश्व को ज्ञान सिखाये ॥
छओं शास्त्र नव ग्रन्थ पुनीता । तुम ही सब कर अम्ब रचयिता ॥
रचेउ अम्ब तुम सकल पुराना । पढ़ि-पढ़ि पावत यह जग ज्ञाना ॥
बाल्मीकि कर तुम ही वाणी । वेद व्यास कर माँ कल्याणी ॥
तेरी महिमा यह जग जाना । सुरदास भये सूर्य समाना ॥
दिव्य दृष्टि जब तुम दीन्हीं । सवा लाख कवित रच दीन्हीं ॥
तुलसी दास शरण जब आये । तब प्रसाद शुचि मति गति पाये ॥
रचेउ ग्रन्थ रामायण पावन । भक्ति सुमति सद्गति सर सावन ॥
शरण गहे कवि कालीदासा । भयउ पूर्ण सब मन कर आशा ॥
विरचेउ ग्रन्थ अनेक महाना । भयउ महाकवि सब जग जाना ॥
जेते गुन विद्या कन नाता । तुम्हि सकल गुणन कर माता ॥
तुमरी महिमा अगम अपारा । जानि कि सकहिं मूढ़ बेचारा ॥
शरणागत कवि अलग निरंजन । करहु मात मम भव भय भंजन ॥
मो पर कृपा करहु जगदम्बे । देहु चरण-रति सद्गति अम्बे ॥
सब सुख-आगर माँ तब चरणा । लहत चतुर नर गहि तव शरणा ॥
तब पग-पंकज जो नित ध्यावें । सकल पदारथ जग महँ पावें ॥
क्षणभंगुर लख्मी कर माया । विनसहिं संग विनश्वर काया ॥
जे नर मातु शरण तब आवें । ते नर अवसि परम पद पावें ॥
तब प्रसाद भव संकट मोचन । हिय कर उघरहिं विमल सुलोचन ॥

सुमिरत भ्रम कपाट खुलि जाहीं । निरखहिं ब्रह्म, रूप जग माहीं ।।
तत्व ज्ञान जब उपजहिं मन में । आत्म ब्रह्म निरखहिं जन-जन में ।।
निरखत मोह निशा झट भागे । हृदय बीज सब सद्गुण जागे ।।
मिलहिं अमर यश यहिं जग माहीं । अन्त ब्रह्म पद निश्चय पाहीं ।।
ग्रसहिं न मतहिं मानसिक रोगा । तब पद भक्त करत नहिं सोगा ।।
अति अद्भुत तब महिमा न्यारी । रहहिं सदा सन्तुष्ट पुजारी ।।
जय जय सरस्वती सुखदात्री । विद्या बुद्धिकला की धात्री ।।
देहु कृपा करि वमल विलोचन । ब्रह्म-ज्ञान भव संकट मोचन ।।
जेहि पद पूजत सकल मुनीषा । तेहि पद पूजि रचेऊ चालीसा ।।
जे नर पढ़ि हैं नित चित लाई । लहिहैं कला ज्ञान सुखदाई ।।
पाठ करत सब विद्या आई । अन्त सम सद्गति मिलि जाई ।।

।। दोहा ।।

बसहु हृदय महँ शारदा, सदा करहु कल्याण ।
देहु दया करि दास को, सद्विद्या सद्ज्ञान ।।